'वसुदेवहिण्डी' में वर्णित साध्वियाँ

विद्यावाचस्पति
डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव...✍

ज्ञान, तप, धर्म, प्रवचन तथा कुपथगामियों को सत्पथ के उपदेश के माध्यम से भारतीय लोकजीवन के उदात्तीकरण में साध्वियों या श्रमणियों की भूमिका सातिशय महत्त्वपूर्ण रही है। इसलिए, प्राकृत की बृहत्कथा 'वसुदेवहिण्डी' के प्रणेता लोकजयी कथाकार आचार्य संघदासगणी ने अपनी इस कथाकृति में साध्वियों की लोक-कल्याणकारी जीवनचर्या का साग्रह वर्णन किया है।

वसुदेवहिण्डी (रचनाकाल : ईसा की तृतीय-चतुर्थ शती) में कुल चौदह आर्याओं या साध्वियों की चर्चा हुई है, जिनके नाम हैं-अजितसेना, कनकमाला, कण्टकार्या, गुणवती, जिनदत्ता, प्रियदर्शना, ब्रह्मिलार्या, रक्षिता, विपुलमति, विमलाभा, सुप्रभा, सुव्रता, सुस्थितार्या और ह्रीमती। यहाँ प्रत्येक आर्या के संबंध में संक्षिप्त परिचर्चा उपन्यस्त है।

१. अजितसेना - पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्द्ध में शीतोदा नदी के दक्षिण सलिलावती नाम का विजय था। वहाँ उज्ज्वल और उन्नत प्राकारवाली बारह योजनलंबी और नौ योजन चौड़ी वीतशोका नाम की नगरी थी। उस नगरी में चौदह रत्नों का अधिपति तथा नौ निधियों से समृद्ध कोषवाला रत्नध्वज नाम का चक्रवर्ती (राजा) रहता था। उसके अतिशय दर्शनीय रूपवाली दो रानियाँ थी--कनकश्री और हेमामालिनी। कनकश्री के कनकलता और पद्मलता नाम की दो पुत्रियाँ थीं तथा हेममालिनी के पद्मा नाम की एक पुत्री थी। इसी पद्मा ने अजितसेना आर्या के निकट धर्मोपदेश सुनकर कर्मक्षय के निमित्त व्रत स्वीकार किया और बासठ उपवास करके निदान (शुभानुष्ठान के फल की अभिलाषा) के साथ मृत्यु को प्राप्त कर सौधर्म कल्प में महर्द्धिक (महावैभवशालिनी) देवी के रूप में उत्पन्न हुई। (इक्कीसवाँ केतुमतीलम्भ)

२. कनकमाला - श्रमणी होने के पूर्व साध्वी कनकमाला सौधर्मकल्प से च्युत होकर मथुरा नगरी के निहतशत्रु राजा की रानी रत्नमाला की पुत्री के रूप में उत्पन्न हुई थीं। उनके पुनर्भव के शरीर में श्वेतकुष्ठ हो गया था। इसलिए, अपने पिता के साथ वे सुधर्मा नामक साधु के निकट प्रव्रजित होकर, समाधिमरण द्वारा कालधर्म प्राप्त करके रिष्टाभ विमान में ब्रह्म के सामानिक वरुणदेव हो गईं। फिर, स्थितिक्षय के कारण वहाँ से च्युत होकर वे दक्षिणार्द्धभरत के गजपुर नगर में शत्रुदमन राजा के रूप में उत्पन्न हुईं। पुनः पुरुषभव में रहते हुए वे शत्रुघ्न नामक साधु के निकट प्रव्रजित हो गईं। (अट्ठारहवाँ प्रियंगुसुन्दरीलम्भ)

३. कण्टकार्या - साध्वी कण्टकार्या का दीक्षापूर्व नाम वसुदत्ता था। वे उज्जयिनी के गृहपति वसुमित्र की पुत्री थीं। उनका विवाह कौशाम्बी के सार्थवाह धनदेव से हुआ था। उन्हें अपने स्वच्छन्द आचरण के कारण अनेक दारुण यातनाएँ झेलनी पड़ी थीं। फलतः उन्हें निर्वेद हो आया और अंत में उज्जयिनी-विहार के लिए निकली सुव्रता साध्वी के चरणों में धर्मप्रवचन सुनकर अपने एक जीवनरक्षक पितृकल्प सार्थवाह की अनुमति से वे प्रव्रजित हो गईं। उसका दीक्षानाम कण्टकार्या रखा गया था। (धम्मिल्लचरित)

४. गुणवती - आर्या गुणवती अतिशय विदुषी साध्वी थीं। उन्होंने ग्यारह अंगों में पारगामिता प्राप्त की थी। जम्बुद्वीप स्थित भारतवर्ष के वैताढ्य पर्वत की उत्तरश्रेणी के नित्यालोक नगर के विद्याधर राजा अरिसिंह और उसकी रानी श्रीधरा के गर्भ से उत्पन्न पुत्री यशोधरा (बाद में राजा सूर्यावर्त की रानी) को उन्होंने प्रव्रज्या प्रदान की थी। दीक्षा के बाद रानी यशोधरा आर्या गुणवती से ग्यारह अंगों में कुशलता प्राप्त करके तपोविद्या में लीन हो गईं। (सोलहवाँ बालचन्द्रालम्भ)

५. जिनदत्ता - साकेतनगर के राजा हरिवाहन की पत्नी सुनन्दा की चार पुत्रियों-श्यामा, नन्दा, नन्दिनी और नन्दमती ने एक साथ जिनदत्ता साध्वी के सान्निध्य में प्रव्रज्या ली थी। आर्या जिनदत्ता को साकेतनगर में पर्याप्तजनसमादर प्राप्त था। (अट्ठारहवाँ प्रियंगुसुन्दरीलम्भ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. प्रियदर्शना - गणिनी प्रियदर्शना गजपुर (हस्तिनापुर) की लोकप्रतिष्ठ साध्वी थीं। गजपुर के युवराज अजितसेन (बाद में राजा) की पुत्री सुदर्शना ने (पूर्वजन्म में श्वायोनि में उत्पन्न) साध्वी प्रियदर्शना से प्रव्रज्या प्राप्त की थी और श्रामण्य का पालन करके देवलोक की अधिकारिणी हो गई थीं। साध्वी प्रियदर्शना अपने नाम के अनुसार ज्ञानदीप्त ज्योतिर्मय रूप से मण्डित थीं। (पीठिका)

९. ब्रह्मिलार्या - साध्वी ब्रह्मिलार्या इक्ष्वाकुवंश की कन्याओं को दीक्षित करने की अधिकारिणी के रूप में सत्प्रतिष्ठ गणिनी थीं। उन्होंने दक्षिणार्द्धभरत के पुष्पकेतु नगर के राजा पुष्पदन्त और रानी पुष्पचूला की विमलाभा तथा सुप्रभा नाम की पुत्रियों को शिक्षित और दीक्षित किया था। दोनों ही अपने तपोबल से भगवतीस्वरूपा हो गई थीं। (अट्ठारहवाँ प्रियंगुसुन्दरीलम्भ)

८. रक्षिता - साध्वी रक्षिता सत्रहवें तीर्थंकर कुन्थुस्वामी की शिष्या थीं। कुन्थुस्वामी के साठ हजार शिष्यों में जिस प्रकार स्वयम्भू प्रमुख थे, उसी प्रकार उनकी साठ हजार शिष्याओं में आर्या रक्षिता प्रमुख थीं। (इक्कीसवाँ केतुमतीलम्भ)

९. विपुलमति - जम्बूद्वीप के पूर्वविदेह क्षेत्र में बहने वाली शीता महानदी के दक्षिणतट पर अवस्थित मंगलावती विजय की रत्नसंचयपुरी के राजा क्षेमंकर के पौत्र तथा राजा वज्रायुध के पुत्र राजा सहस्त्रायुध की दो पुत्रवधुओं-कनकमाला और वसन्तसेना ने एक साथ साध्वी विपुलमति से प्रव्रज्या प्राप्त की थी। साध्वी विपुलमति हिमालय के शिखर पर रहती थीं। उनसे दीक्षित होने के बाद कनकमाला और वसन्तसेना निरंतर तप में उद्यत रहकर बहुजनपूज्या आर्या हो गईं। (इक्कीसवाँ केतुमतीलम्भ)

१०.-११. विमलाभा और सुप्रभा - जैसा पहले (साध्वी सं. ७ में) कहा गया, दक्षिणार्द्धभरत के पुष्पकेतु नगर के इक्ष्वाकुवंशी राजा पुष्पदन्त और उसकी रानी पुष्पचूला से उत्पन्न दो पुत्रियों के नाम थे-विमलाभा और सुप्रभा। दोनों ही पुत्रियों ने साध्वी ब्रह्मिलार्या से दीक्षा ग्रहण की थी और बाद में दोनों ही प्रज्ञाप्रखर पण्डिता आर्याओं के रूप में लोकसमादृत हुईं।

१२. सुव्रता - कथाकार आचार्य संघदास गणी ने सुव्रता नाम की साध्वी की चार भिन्न संदर्भों में चर्चा की है। जैसे-

(क) सुव्रता साध्वी मगध जनपद के राजगृह नगर में रहती थीं। वहाँ के जनसमादृत इभ्य ऋषभदत्त का पुत्र जम्बु कुमार सुधर्मास्वामी (भगवान महावीर का पट्टधर शिष्य) से दीक्षित हुआ था और बाद में वह उनका जम्बुस्वामी के नाम से प्रमुख शिष्य हो गया था। जम्बुस्वामी की माता धारिणी और उनकी आठ पत्नियों (पद्मावती, कनकमाला, विनयश्री, धनश्री, कनकवती, श्रीसेना, ह्रीमती और जयसेना) ने एक साथ सुव्रता का शिष्यत्व स्वीकार किया था। (कथोत्पत्ति)

(ख) पूर्वोक्त कण्टकार्या (साध्वी सं. ३) की दीक्षागुरु का नाम सुव्रता था। वह जीवस्वामी (अ. जीवंतसामी) की अनुयायिनी भिक्षुणी प्रमुख (गणिनी या गणनायिका) थीं। उज्जयिनी -विहार के क्रम में उन्होंने मार्गभ्रष्टा सार्थवाहपत्नी वसुदत्ता को दीक्षित करके उसे कण्टकार्या, दीक्षानाम दिया था। (धम्मिल्लचरित)

(ग) मथुरा जनपद में सुग्राम नाम का गाँव था। वहाँ सोम नाम का ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी सोमदत्ता थी। उसकी पुत्री का नाम गंगश्री था, जो परमदर्शनीय रूपवती थी। वह निरंतर अर्हत्शासन में अनुरक्त रहती थी और कामभोग की अभिलासा से विरक्त थी। सुग्राम में ही यक्षिल नाम का ब्राह्मण रहता था। वह गंगश्री का वरण करना चाहता था, लेकिन गंगश्री उसे नहीं चाहती थी। जब गंगश्री उसे नहीं मिली, तब उसने वरुण नामक परिव्राजक के निकट परिव्राजकपद्धति से प्रव्रज्या ले ली। इधर गंगश्री भी सुव्रता आर्या के निकट प्रव्रजित हो गई। गंगश्री के प्रव्रजित होने की सूचना मिलने पर यक्षिल ने भी जैन साधु की पद्धति से प्रव्रज्या स्वीकार की। (अट्ठारहवाँ प्रियंगुसुन्दरीलम्भ)

(घ) जम्बूद्वीप स्थित पूर्वविदेह के रमणीय विजय की सुभगा नगरी के युवराज बलदेव, अपर नाम अपराजित की विरता नाम की पत्नी से उत्पन्न सुमति नाम की पुत्री ने राजकुल की सात सौ कन्याओं के साथ सुव्रता आर्या के निकट दीक्षा ग्रहण की थी। फिर, उसने तपः क्रम अर्जित करके केवल ज्ञान प्राप्त किया और क्लेशकर्म का क्षय करके सिद्धि प्राप्त की। (इक्कीसवाँ केतुमतीलम्भ)

१३. सुस्थितार्या - जम्बूद्वीप स्थित ऐरवतवर्ष के विन्ध्यपुर नगर में राजा नलिनकेतु राज्य करता था। उसकी रानी का नाम था प्रभंकरा। एक दिन मेघपुंज को हवा में तितर-बितर होते देख राजा नलिनकेतु ने मेघ की भांति समृद्धि के उदय और विनाश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को अनित्य भावना से विचारते हुए राजर्द्धि का परित्याग कर दिया और वह क्षेमंकर जिनवर के निकट प्रव्रजित हो गया। तब उसकी प्रकृतिभद्र रानी प्रभंकरा भी मृदुता और ऋजुता से सम्पन्न होकर चांद्रायण और प्रौषध व्रत करके आर्या सुस्थिता के समीप दीक्षित हो गई। (इक्कीसवाँ केतुमतीलम्भ)

१४. ह्रीमती - सिंहपुर नगर के राजा सिंहसेन की पत्नी का नाम रामकृष्णा था। उसकी माता आर्या ह्रीमती लोकसमादर प्राप्त साध्वी थीं। वे अपनी अनेक शिष्याओं के परिवार की अनुशासिका थीं। जब उनके जामाता राजा सिंहसेन की मृत्यु हो गई, तब उन्होंने अपनी पतिहीना पुत्री को जिन शब्दों में अनुशासित किया, वह अनुशासन जीव को उदात्त बनाने की दृष्टि से सदा मननीय है। ह्रीमती ने कहा-"पुत्री! धर्म के विषय में कभी प्रमाद न करो। मानव जीवन विनिपातों से भरा हुआ है-विनश्वर है। प्रियजन का संयोग अवश्य ही वियोगान्त है। ऋद्धियाँ सन्ध्याकालीन रंगीन मेघ की भाँति स्थिर (देर तक टिकने वाली) नहीं हैं। देवलोकवासी देव भी जीवन मोह और विषय भोग से तृप्ति नहीं प्राप्त करते, जिनकी आयु पल्योपम और सागरोपम के बराबर सुदीर्घकालीन होती है, जो अपनी मति और रुचि के अनुसार मनोहर शरीर का विकुर्वण (प्रतिरचना) कर सकते हैं, सर्वत्र अप्रतिहत गति से आ जा सकते हैं और फिर विनय-प्रणत यथायोग्य आदेशों को पूरा करने वाली, सदा अनुकूल रहने वाली तथा सकल कला प्रसंगों की मर्मज्ञा देवियाँ बड़ी निपुणता से जिनकी सेवा करती हैं। तो फिर मनुष्यों की क्या बिसात, जिनका शरीर केले के थम्भ और बाँस की तरह निस्सार होता है, विघ्नबहुल और अल्पजीवी होता है, जिनके वैभव को सामान्यतया राजा, चोर, आग और पानी का भय बराबर बना रहता है। साथ ही, जिनकी शारीरिक रचना पुरानी गाड़ी की नाईं ढीले जोड़ों वाली होती है, ऐसे पत्रचंचल शोभा वाले मनुष्य संकल्प-विकल्प के जल से परिपूर्ण मनोरथ-सागर के उस पार कैसे जा सकेंगे? विगतप्राण स्थावर जंगम जीवों के शरीरांग कार्य करने में असमर्थ होते हैं ऐसी स्थिति में मनुष्यभव प्राप्त करना प्रायश्चित के समान हो जाता है। इस प्रकार का शरीर स्वभावतः अशुचि और परित्याज्य होता है। तो, शरीर जब तक निरातंक (नीरोग) है, तप और संयम के साधन की सहायता से अपने को परलोकहित के लिए अर्पित कर दो।"

इस प्रकार उपदेश देती हुई आर्या ह्रीमती के पैरों पर रानी रामकृष्णा गिर पड़ी और बोली "आपका कथन सुभाषित की तरह तथ्यपूर्ण है। मैं आपके उपदेश को सफल करूँगी। यह कहकर रानी ने गृहवास छोड़कर प्रव्रज्या ले ली और वह श्रमणी हो गई। (सोलहवाँ बालचंद्रालम्भ)।

इस तरह साध्वियों के संबंध में उपर्युक्त आकलन से स्पष्ट है कि तत्कालीन सामाजिक जीवन को धर्म, दर्शन और आचार की दृष्टि से उन्नत करने तथा लोकजीवन को सही दिशा देने में जैन आर्याओं के योगदान का ततोऽधिक सांस्कृतिक मूल्य है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org